श्रीहितजी महाराज जहाँ चले–फिर उस छोटे से दायरे वाले स्थान की सिद्धता से यह प्रतीति है फिर क्यों नहीं उसका आनन्द लेके क्षणिक जीवन को धन्य बनाने की चेष्टा की जाती है। संसार अपने दृष्टिकोण से ही सारी वस्तुओं को देखता है। इसमें हमें तर्क भी नहीं करना है बल्कि इसी तरह चलते हुए कहना है। समय के कुछ कारणों से जैसे अपना सिद्धि केलिस्थल वंशीवट अपने हाथों से निकल गया उनको लाने की चेष्टा न हो पाई। मदनटेर भी चला ही गया था, इसके लिए महाश्रेय प्रातःस्मरणीय पूज्य पितृचरण श्रीहित गोस्वामी रूपलालजी महाराज टीकैत को ही है, उन्हें प्रेरित करने का परम सन्त श्रीनवेलीशरण व प्रेमदासी को है।

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय इस महत कार्य को उनकी ऋणी है, यह अपने नाम यश को नहीं श्रीजी के नाम के लिये ही किया। इस स्थान में उन महानुभावों ने कितना श्रम, तन, मन, धन से किया जिन चक्षु ने देखा वही जानै अपने दृष्टिकोण से बताता हूँ इसी स्थान के किसी भाग में किसी सिद्धि के लिए चाहे ध्यान, भजन, परमार्थ कामना ठीक उसी प्रकार हल होती है जैसे महासिद्ध पुरूष कोई स्वयं मार्ग बता रहा है। अनुभूति की वार्ता है। भावुक हृदय ही समझ सकें। समय–समय पर स्थान ने उत्थान गाथायें भी देखी हैं। अनेक सन्तों ने यहाँ भजन, सत्संग, ध्यान प्रशादादि का आनन्द लिया दिया है; मनोहर इस स्थल के दर्शन कर आज भी हृदय में सहज भाव आये बिना नहीं रहे, श्रीजी में कृपा बरषती है। प्रवेश करते ही मन को शान्ती मिली ये स्थान की महत्ता है, मन चाहता है ये कृपा हम पर भी हो मयूरों का नृत्य, पक्षियों का कलरव, अन्न चुगना देखते बनता है। श्रीजी को पुष्प सेवा वर्षों करने का मदनटेर को गौरव रहा है। उन हाथों को धन्य है जिसने ये सेवा की, आज भी लगन से हो सके।

श्रीहित भजनलाल गोस्वामी

श्रीराधावल्लभ मन्दिर, वृन्दावन

''हित अलि प्यारी कुंवरि को, पुनि–पुनि चेत कराय।
मदन टेर की ओर बलि, काहे देर लगाय॥''

गो. श्रीकीर्तिलालजी कृत

॥ श्रीराधावल्लभ श्रीहित हरिवंश ॥

॥ श्रीवृन्दावन श्रीवनचन्द्र ॥

श्रीजी श्रीजी

अनन्त श्रीविभूषित श्रीराधावल्लभजी महाराज को

(प्रामाणिक साम्प्रदायिक)

उत्सव–निर्णय–पत्रम्

(श्रीमद् श्रीबापूदेव शास्त्री प्रवर्तित दृक्सिद्ध वि. सं. 2074, पंचांगानुसार)

❁

आज्ञा से :

गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी

टीकैत अधिकारी

फोन न. 2442857 (घर) मो. 9719325778

❁

सम्पादक एवं प्रकाशक :

श्रीहित आनन्दलाल गोस्वामी

(सेवायत–सेवाकुञ्ज, निकुञ्जवन)

श्रीराधावल्लभ मन्दिर, वृन्दावन ❁ मो. 9756033351

❁

सहयोगी : द्वारकादास हरिश्चन्द्र खिलौने वाले

श्री महेशचन्द्र अग्रवाल (मो. 09899663655)

श्री विजय अग्रवाल खिलौने वाले (मो. 09312232606)

धर्मार्थ संस्थान, देहली– मथुरा

011–23628471, 011–47500999

हिताब्द 544–545 ❁ संवत् 2074 वि. ❁ सन् 2017–2018

卐 श्रीराधावल्लभ श्रीहित हरिवंश 卐

श्रीहित राधेशलाल जी गोस्वामी

''तिलकायत अधिकारी''

श्रीराधावल्लभ मन्दिर, श्रीहित वृन्दावन के द्वारा निर्देशित सम्पन्न होने वाली सेवाओं का विवरण

सेवा विवरण 2017–2018

वैशाख	12/04/17	से	11/05/17	शुक्रवार	तक
आषाढ़	10/06/17	से	10/07/17	सोमवार	तक
श्रावण	31/07/17	से	23/08/17	बुद्धवार	तक
आश्विन	07/09/17	से	06/10/17	शुक्रवार	तक
मार्गशीर्ष	05/11/17	से	04/12/17	सोमवार	तक
माघ	02/1/18	से	01/02/18	गुरुवार	तक
चैत्र	02/03/18	शुक्रवार से सेवा वदली रात्रि से			

: विशेष :

मन्दिर सम्बन्धी समस्त जानकारी तिलकायत अधिकारीजी से प्राप्त करें।

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥ ॥ श्रीहितहरिवंशचन्द्रो जयति ॥

॥ श्रीअधिकारी किशोरी, हित रूप, गुरु सुकुमारी विजयेताम् ॥

॥ श्रीहित भजन लालो विजयते ॥

श्रीराधावल्लभ भजत भजि, भली–भली सब होय।
जिते विनायक शुभ–अशुभ, विघ्न करें नहीं कोय॥
हित की यहाँ उपासना, हित के हैं हम दास।
हित विशेष राखत रहों, चित्त नित हित की आस॥

उत्सव–निर्णय–पत्रम्

चैत्र शुक्ल पक्ष

(सेवा रासवंश)

ता.	माह	तिथि	वार	उत्सव
28	मार्च	1	शनि	साधारण नाम संवत्सरारम्भ 2074, नवीन पोशाक धारण, राजभोग में खीर आदि विशेष।
2	अप्रैल	6	रवि	यमुना महोत्सव।
5	अप्रैल	9	बुद्ध	रामनवमी, लाल–पीली पोशाक, विशेष भोग, समाज में राम–जन्म बधाई।
7	अप्रैल	11	शुक्र	कामदा एकादशी (गुलाब डोल), संध्या आरती पश्चात् ''फूलन कुँज गुलाब'' यह पद होय।
11	अप्रैल	15	मंगल	**पूर्णिमा,** श्रीहितरास मण्डल पर आज से श्रीहित महाप्रभुजी की बधाई प्रारम्भ। आज शृंगार भोग में मोहन थार आदि भोग रखनों।

वैशाख कृष्ण पक्ष

सेवा अधिकारी विलासवंश (12–4–17 से 12–5–17 शुक्रवार तक)

13	अप्रैल	2	गुरु	दौज – मन्दिर में श्रीहित चतुरासीजी एवं सेवकवाणी जी की समाज प्रारम्भ।
22	अप्रैल	11	शनि	एकादशी (बरूथिनी)।
26	अप्रैल	30	बुद्ध	अमावस्या।

वैशाख शुक्ल पक्ष

29	अप्रैल	3	शनि	अक्षयतृतीय चंदनोत्सव, चंदन का श्रृंगार, चंदनी पोशाक धारण करैं श्रीजी, ग्रीष्मऋतु को श्रृंगार समाज में चन्दन के वाद,श्रीहित गोस्वामी अक्षयजी कौ जन्मोत्सव।
30	अप्रैल	4	रवि	श्रीहित गोस्वामी मुकुटमणिजी कौ जन्मोत्सव।
3	मई	8	बुद्ध	आज से 4 दिन चाव निकले, श्रीजी महाराज के मन्दिर से।
5	मई	10	शुक्र	श्रीजी महाराज के लाल पोशाक धारण, रासमण्डल पर रात्रि जागरण, ढाँढ़ी-ढाँढ़िनि नृत्य, बधाई-गाान।
6	मई	11	शनि	एकादशी (मोहनी) श्रीहितराधावल्लभ सम्प्रदाय प्रवर्तक अनन्तश्रीविभूषित, वंशी अवतार, रसावतार श्रीराधासुधानिधी जी के प्रगट कर्ता, श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी कौ प्राकट्योत्सव, श्रीजी मन्दिर में मंगला से पूर्व बधाई-गान, विशेष भोग, भारी पोशाक, मंदिर में सजावट, रोशनी इत्यादि। गोस्वामी श्रीलाड़िलीलाल जी अधिकारी कौ जन्मोत्सव, हिताब्द 544 प्रारम्भ।
10	मई	15	बुद्ध	**पूर्णिमा**।
11	मई	1	गुरु	श्रीहित महाराज जी की छठी

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

(सेवा रासवंश 12-5-17 रात्रि से 10-6-17 तक)

13	मई	2	शनि	वनविहार रात्रि में समाज के साथ श्रीवृन्दावन परिक्रमा।
15	मई	4	सोम	श्रीहित महाप्रभु जी कौ दष्ठौन।
22	मई	11	सोम	एकादशी (अपरा)।
25	मई	30	गुरु	अमावस्या।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

4	जून	10	रवि	गंगा दशहरा।

5	जून	11	सोम	एकादशी (निर्जला) जल विहार के पद, श्रीजी नौका में या कुञ्ज में विराजें। ''सुन्दर पुलिन सुभग सुखदायक'' यह पद समाज में होय।
9	जून	15	शुक्र	**पूर्णिमा।**

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

(सेवा अधिकार विलासवंश 10-6 से 10-7-17 सोमवार तक)

14	जून	5	बुद्ध	गोस्वामी श्रीहितरूपलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव। गोस्वामी श्रीहित गोविन्दलालजी कौ जन्मोत्सव।
20	जून	11	मंगल	एकादशी (योगिनी)।
24	जून	30	शनि	अमावस्या, गोस्वामी श्रीहित सुकुमारी लाल जी टीकैत अधिकारी कौ जन्मोत्सव।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

25	जून	2	रवि	रथयात्रा, श्रीजी लाल बागो धारण करें, मल्हार के पद प्रारंभ समाज में, रथयात्रा के पद 'रथ चढ़ि आवत सांवरो' प्रथम श्रीहितजू महाराज की मल्हार होय, गोस्वामी श्रीहित नवनीतलाल जी अधिकारी कौ जन्मोत्सव।
4	जुलाई	11	मंगल	एकादशी (देवशयनी)।
6	जुलाई	13	गुरु	गोस्वामी श्रीहित विलासदास जी महाराज अधिकारी कौ जन्मोत्सव।
9	जुलाई	15	रवि	**गुरु पूर्णिमा,** गोस्वामी श्रीहित दामोदरवर प्रभु अधिकारी कौ जन्मोत्सव, सेवक चरित्र की कथा प्रारम्भ।

श्रावण कृष्ण पक्ष

(सेवा रासवंश 10-7-17 से 31-7-17 तक)

17	जुलाई	8	सोम	श्रीहित हितलालजी गोस्वामी कौ जन्मोत्सव।
20	जुलाई	11	गुरु	एकादशी (कामिका) आज से श्रीसेवकजी महाराज कौ उत्सव-बधाई प्रारम्भ होय। मोहनभोग कौ भोग लगै।

23	जुलाई 30	रवि	अमावस्या हरियाली (हरी पोशाक धारण)

श्रावण शुक्ल पक्ष

25	जुलाई 2	मंगल	सिंधारो उत्सव, रात्रि समाज में सिंधारे और मेंहदी के पद। रात्रि में सिंधारे की सब वस्तु सिज्जा में रखी जायें। नित्य प्रति नई-नई वस्तु रखी जायें।
26	जुलाई 3	बुद्ध	हरियालीतीज (श्रीसेवकजी का जन्मोत्सव) हिंडोरा (झूला) प्रारम्भ।

(सेवा अधिकारी विलासवंश 31-7-17 से 23-8-17 बुद्धवार तक)

3	अगस्त 11	गुरु	एकादशी (पवित्रा) श्रीजी दोनों समय पवित्रा धारण करें, समाज में पवित्रा के पद।
7	अगस्त 15	सोम	**पूर्णिमा** (रक्षाबन्धन-श्रीजी दोनों समय राखी धारण करें) रक्षाबन्धन के पद, झूला समाप्ति, लालजी की बधाई-प्रारम्भ-आनंद आज नंद के द्वार, संध्या आरती पीछे झूला की समाप्ति। **(चन्द्रग्रहण रात्री 10.53 से 12.49 तक)**

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

15	अगस्त 8	मंगल	श्रीकृष्णजन्माष्टमी, श्रीलालजी की बधाई समाज में।
16	अगस्त 9	बुद्ध	नन्दोत्सव, औलाई नहीं होय, हितोत्सव की तरह साथिये स्थापित, श्रीहित गोपाललाल गोस्वामीजी कौ जन्मोत्सव।
18	अगस्त 11	शुक्र	एकादशी (अजा)।
20	अगस्त 13	रवि	लालजी की छठी समाज में प्रियाजी की बधाई प्रारम्भ ''चलौ वृषभानु गोप के द्वार''।
21	अगस्त 30	सोम	सोमवती अमावस्या।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

(सेवा रासवंश 23-8-17 रात्री से 7-9-17 तक)

26	अगस्त 5	शनि	आज से चाव, श्री हितोत्सव की भाँति चार दिन पर्यन्त 'श्रीहितरासमण्डल' में जाये (दो दिन बड़ी सरकार से)।

28	अगस्त 7	सोम	लाल पोशाक धारण करें रात्रि में शयन आरती के बाद दर्शन खुलैं, रात्रिभर ढ़ाँढ़ी-ढ़ाँढ़िन कौ नृत्य, चौदण्डी केला मंडप, वंदनवार आदि बँधें, आज औलाई नहीं होय, शयन आरती पीछे नई पहुँची, चिबुक वेसर, हथफूल धारण होय।
29	अगस्त 8	मंगल	**श्रीराधाष्टमी,** श्रीहित महाप्रभुजी के गुरु को जन्मोत्सव मंगला आरती के बाद दधिकांदौ, 12 बजे से ब्रजवासिन कौ दधिकांदौं, 2 बजे से गोस्वामी स्वरूपों को दधिकांदौ, रात्रि में चाव, दधिकांधौ समाज सहित श्रीहित मंदिर, श्रीवनचन्द्रजी कौ डौल, श्री श्रीसेवाकुंज होते भये श्रीहित रासमंडल पै जाय फिर श्रीयमुना स्नान। कृष्णजन्मानुसार साथिये धरे जाय, श्रीहित महाप्रभु जी की चाव के पीछे श्रीबिहारीजी की चाव ''श्रीहरिवंशी हरिदासी जी'' की चाव को स्मरण करावै, गोस्वामी श्रीहित किशोरीलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव।
2	सित. 11	शनि	एकादशी (परिवर्तिनी)।
3	सित. 12	रवि	प्यारी प्रियाजू की छठी, आज तक प्रियाजी की बधाई होय, श्रीहित महाप्रभुजी के चित्र की प्रतिष्ठा भई।
6	सित. 15	बुद्ध	**पूर्णिमा**, आज से साँझी प्रारम्भ। समाज में साँझी के पद, आज से फूलन की नाना प्रकार की झाँकी बनें, ''वन की लीला लालहि भावै...., फूलन वीनन हौं गई सखी''।

आश्विन कृष्ण पक्ष

(सेवा अधिकारी विलाासवंश 7-9-17 से 6-10-17 शुक्रवार तक)

7	सित. 2	गुरु	दसठोन प्रियाजी कौ।
15	सित. 10	शुक्र	गोस्वामी श्रीहित जीवनलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव।

16	सित.	11	शनि	इन्दिरा एकादशी (रंगन की साँझी बने अमावस्या तक)
20	सित.	30	बुद्ध	अमावस्या।

आशिवन शुक्लपक्ष

30	सित.	10	शनि	विजय दशमी, श्रीजी महाराज कर्ण पर यव एवं लाल पोशाक (भारी शृंगार) धारण करें 'खेलत रास रसिक ब्रज मंडन'।
1	अक्टू.	11	रवि	एकादशी (पापांकुशा)।
3	अक्टू.	13	मंगल	गोस्वामी शोभित लाल जी कौ जन्मोत्सव
5	अक्टू.	15	गुरु	**शरदपूर्णिमा** (शरद के पद 'मोहन मदन त्रिभंगी...') होय।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

(सेवा रासवंश 6-10-17 रात्रि से 5-11-17 तक)

7	अक्टू.	2	शनि	द्वितीया शरद लाल पाग धारण, समाज में ''लाल की रूप माधुरी'' पद होय।
12	अक्टू.	7	गुरु	अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान।
14	अक्टू.	10	शनि	गोस्वामी श्रीमोहनचन्द्र प्रभु कौ जन्मोत्सव।
15	अक्टू.	11	रवि	एकादशी (रमा)।
17	अक्टू.	13	मंगल	धनत्रयोदशी।
18	अक्टू.	14	बुद्ध	छोटी दीपावली।
19	अक्टू.	30	गुरु	अमावस्या, दीपमालिका, श्रीजी चाँदी की हटरी में विराजें दोनों समय चौपड़ खेलें, श्वेत जरी की पोशाक धारण।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

20	अक्टू.	1	शुक्र	रात्रि में श्रीजी कौ विवाहोत्सव ''नव दूलह दुलहिन कौ तिलक करनौं प्रत्येक सेवक को आवश्यक कर्तव्य है। (सुनहरी जरी की पोशाक धारण करैं)

श्रीगोवर्धन पूजा, अन्नकूट।

21	अक्टू.	2	शनि	भ्रातृ दुतिया (भैया दौज के पद)।
28	अक्टू.	8	शनि	गोपाष्टमी-श्रीजी महाराज हस्तकमल में छड़ी लें। (गोचारण की पोशाक नटवर वेष)।

29	अक्टू.	9	रवि	अक्षय नवमी, वृन्दावन-मथुरा युगल परिक्रमा, मदनटेर पर प्रसाद वितरण।
31	अक्टू.	11	मंगल	प्रबोधनी एकादशी (देवोत्थान) चौक काढ़े जायें, दीपदान होय।
2	नव.	13	गुरु	निभृतनिकुंजविलासी, नित्यविहारी, श्रीराधावल्लभ लाल जी कौ पाटोत्सव, श्रीवृन्दावन कौ प्राकट्य उत्सव, सेवाकुञ्ज में अन्नकूट, गोस्वामी श्रीहित सुन्दरवर प्रभु अधिकारी जी कौ जन्मोत्सवं। आज ही श्रीवनचन्द्र महाप्रभुजी तथा आज तक जितने अधिकारी गुरु गद्दी पर विराजे सबको तिलकोत्सव दरबार आज ही भयो और होय, श्रीहितोत्सव की तरह समाज में साथिये, केला, वंदनवार पंचामृत स्नान, विशेष दीपदान रोशनी मन्दिर की सजावट आदि होय, अभूतपूर्व दर्शन होंय।
4	नव.	15	शनि	**पूर्णिमा**।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

(सेवा अधिकारी विलासवंश 5-11-17 रात्रि से 4-12-17 सोमवार तक)

5	नव.	1	रवि	गोस्वामी श्री विपिन कुमार जी कौ जन्मोत्सव।
6	नव.	2	सोम	आज से समाज में बयालीस लीला होय, गोस्वामी श्रीहित कीर्तिकुमार (लाल) जी महाराज कौ जन्मोत्सव।
7	नव.	4	मंगल	गो. श्रीहित कन्हैयालालजी कौ जन्मोत्सव।
8	नव.	5	बुद्ध	गो. श्रीहित कुमार जी कौ जन्मोत्सव।
9	नव.	6	गुरु	छींठ छठ, आज से हिम ऋतु कौ शृंगार होय।
14	नव.	11	मंगल	एकादशी (उत्पत्ति)।
18	नव.	30	शनि	अमावस्या, गो.श्रीहित सुखलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

30	नव.	11	गुरु	एकादशी (मोक्षदा)।

1	दिस.	12	शुक्र	व्यञ्जन द्वादशी, अंगीठी शीत उपचारार्थ- श्रीजी के सम्मुख, शृंगार और संध्या आरती पीछे रखी जाये।
2	दिस.	14	शनि	गोस्वामी श्रीहित राधेशलालजी महाराज टीकैत अधिकारी, कौ जन्मोत्सव।
3	दिस.	15	रवि	**पूर्णिमा**।

पौष कृष्ण पक्ष

(सेवा रासवंश 4-12-17 रात्रि से 2-1-2018 तक)

13	दिस.	11	बुद्ध	एकादशी (सफला)।
18	दिस.	30	सोम	सोमवती अमावस्या।

पौष शुक्ल पक्ष

20	दिस.	2	बुद्ध	आज से एक मास तक मंगला से पूर्व खिचड़ी भोग लगे। मंगला में नित्य नयी फरगुल धारण होय। **मंगला के उपरान्त श्रीजी भेष बदलकर छद्म की झाँकी दें।**
29	दिस.	11	शुक्र	एकादशी (पुत्रदा)।
31	जन.	15	बुद्ध	**पूर्णिमा। (सन् 2018)**

माघ कृष्ण पक्ष

(सेवा अधिकारी विलासवंश 2-1-2018 से 1-2-2018 बुद्धवार तक)

5	जन.	4	रवि	गोस्वामी श्री मोहितमराल जी (युवराज) को जन्मोत्सव।
12	जन.	11	शुक्र	एकादशी (षट्तिला)।
17	जन.	30	बुद्ध	अमावस्या (मौनी)।

माघ शुक्ल पक्ष

19	जन.	2	शुक्र	आज मोहनभोग को भोग लगे, समाज में मोहन भोग के पद होय, टोपा दुशालन के दर्शन होंय 'वारी को भंवरवा' पद समाज में, गोस्वमी श्रीहित मोहनलालजी महाराज अधिकारी कौ जन्मोत्सव। गोस्वामी श्रीहित उदितमणिजी का जन्मोत्सव।

22	जन.	5	सोम	बसन्त पंचमी, बसन्ती पोशाक धारण बसन्त के पद समाज में, सेवाकुञ्ज में समाज, आज से शृंगार और संध्या आरती पर किंचित गुलाल उड़ायो जाये।
26	जन.	9	शुक्र	गोस्वामी श्रीहित कृष्णचन्द्र प्रभु कौ जन्मोत्सव।
28	जन.	11	रवि	एकादशी (जया)।
31	जन.	15	बुद्ध	**पूर्णिमा,** होरी डांडो के पद, होरी धमार-समाज में प्रारंभ, प्रथम यथामति पद आज से। (खग्रास चन्द्रग्रहण सायं 5.18 से 8.42 तक)

फाल्गुन कृष पक्ष

(सेवा रासवंश 1-2-18 रात्रि से 2-3-18 तक)

11	फर.	11	रवि	एकादशी (विजया), गोस्वामी श्री किशोरीलाल जी अधिकारी की कुंज में समाज, रात्रि में मानसरोवर रासमण्डल पर समाज। सब मिलकर जागरण करें।
12	फर.	12	सोम	गोस्वामी श्रीहित भजनलाल जी महाराज कौ जन्मोत्सव।
14	फर.	14	बुद्ध	शिव चौदस, समाज में जोगिया छद्म होय।
15	फर.	30	गुरु	अमावस्या।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17	फर.	2	शनि	फुलैरादौज, समाज में रसिया प्रारम्भ (सेवाकुंज में भी समाज), शृंगार, संध्या आरती पर गुलाल खूब उड़े, कमर में गुलाल की फैंट बंधै, कपोलन (गालों) पर गुलाल।
18	फर.	3	रवि	आज से दशमी तक सेवाकुंज में छद्म लीला समाज।
26	फर.	11	सोम	आमलकी एकादशी रंग भरी ब्रज में होली प्रारम्भ, श्रीजी के मन्दिर से सवारी नगर यात्रा करे। रात्रि में होली, श्रीजी महाराज का विवाह महोत्सव ''व्याहुले में श्रीजी कै तिलक सब सेवकन को करनौ चाहिये।''

28	फर.	13	बुद्ध	दिन में अर्द्धांग के दर्शन अद्भुत होंय।
1	मार्च	15	गुरु	होलिका-दहन, गोस्वामी श्रीहित सुकृतलाल जी कौ जन्मोत्सव। **पूर्णिमा**।
2	मार्च	1	शुक्र	मोरछली की पत्ती के डोल में श्रीजी झूलें। प्रथम यथामति पद राग चैती गोरी में होय। गोस्वामी श्री गोपीनाथजी प्रभु को जन्मोत्सव।

चैत्र कृष्ण पक्ष

(सेवा अधिकारी विलासवंश 2 शुक्र मार्च से सेवा वदली रात्रि से)

5	मार्च	4	सोम	बादग्राम में जागरण समाज में गोस्वामी श्रीहित हरिलाल जी अधिकारी कौ जन्मोत्सव।
6	मार्च	5	मंगल	बादग्राम में होली (डोलोत्सव) समाज आदि उत्सव होय।
7	मार्च	6	बुद्ध	गोस्वामी श्रीहित वनचन्द्र महाप्रभुजी अधिकारी को जन्मोत्सव
13	मार्च	11	मंगल	पापमोचनी एकादशी।
15	मार्च	13	गुरु	गोस्वामी श्रीहित वृजराज कमल जी कौ जन्मोत्सव।
17	मार्च	30	शनि	अमावस्या।

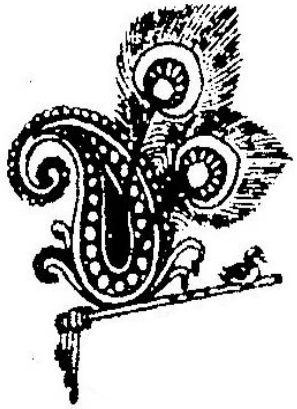

श्रीआचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंश जी कृत

श्रीयमुनाष्टक

व्रजाधिराजनन्दनाम्बुदाभगात्र चंदना-
नुलेपगंधवाहिनीं भवाब्धिबीजदाहिनीम्।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधा पयस्विनीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम्॥1॥

रसैकसीमराधिका पदाब्जभक्ति साधिकाम्
तदंगरागपिंजरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम्।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतां जनाधि गञ्जनाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्॥2॥

ब्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदि प्रपूर्य्यमाणयो-
र्महारसाब्धिपूरयोरिवाति तीव्रवेगतः।
बहिः समुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम्॥3॥

विचित्ररत्नबद्ध सत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलाम्
विचित्र हंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम्।
विचित्र मीनमेखलां कृतातिदीनपालिताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्॥4॥

वहंतिकां श्रियां हरेर्मुदा कृपास्वरूपिणीम्
विशुद्धभक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः।

सुधाश्रुतिन्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥5 ॥

सुरेन्द्रवृन्दवन्दितां रसादधिष्ठिते वने
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैक सदृशोन्मदाम्।
अतीव विह्वलामिवोच्चलत्तरंगदोर्लताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥6 ॥

प्रफुल्लपंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणाम्
रथांगनामयुग्मकस्तनीमुदार हसंकाम्।
नितंबचारुरोधसां हरेर्प्रिया रसोज्ज्वलां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥7 ॥

समस्तवेदमस्तकैरगम्य वैभवां सदा
महामुनीन्द्रनारदादिभिः सदैव भाविताम्।
अतुल्यपामरैरपि श्रितां पुमर्थसारदाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥8 ॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्
कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिंत्य विश्ववंदिताम्।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रि..... ॥9 ॥

॥ इति श्रीहितहरिवंशगोस्वामिना विरचितं यमुनाष्टकम् ॥

★

॥ श्री हितं वन्दे ॥

युगल ध्यान

श्रीप्रिया बदन छबि चन्द्र मनौ, प्रीतम नैन चकोर।
प्रेम सुधारस माधुरी, पान करत निसि भोर ॥१ ॥
अंगन की छवि कहा कहों, मन में रहत विचार।
भूषन भये भूषननिको, अति स्वरूप सुकुमार ॥२ ॥
सुरंग मांग मोतिन सहित, शीश फूल सुख मूल।
मोर चन्द्रिका मोहनी, देखत भूली भूल ॥३ ॥
श्याम लाल बेंदी बनी, शोभा बनी अपार।
प्रगट विराजत शशिन पर, मनौ अनुराग सिंगार ॥४ ॥
कुण्डल कल ताटंक चल, रहे अधिक झलकाइ।
मनो छवि के शशि भानु जुग, छबि कमलनि मिलिआइ ॥५ ॥
नासा बेसर नथ बनी, सोहत चंचल नैन।
देखत भाँति सुहावनी, मौहे कोटिक मैन ॥६ ॥
सुन्दर चिबुक कपोल मृदु, अधर सुरंग सुदेश।
मुसकनि वरषत फूल सुख, कहि न सकत छबि लेश ॥७ ॥
अंगनि भूषनि झलकि रहे, अरु अन्जन रंग पान।
नव सत सरवर ते मनौ, निकसे करि स्नान ॥८ ॥
कहि न सकत अंगन प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ।
मानौ बागे रुपके, पहिरे दुहुन बनाइ ॥९ ॥
रतनागंद पहुँची बनी, बलया बलय सुढ़ार।
अगुंरिन मुंदरी फव रही, अरु मेहँदी रंग सार ॥१० ॥
चन्द्र हार मुक्तावली, राजत दुलरी पोति।
पानि पदिक उर जग मगै, प्रतिविमबित अंग जोति ॥११ ॥
मनि मय किंकिन जाल छवि, कहौं जोइ सोइ थोर।
मनौ रूप दीपावली, झलमलात चहुँ ओर ॥१२ ॥
जेहरि सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारि।
और छाँड़ि कै या छवि, हिय के नैन निहारि ॥१३ ॥

बिछुबनि की छबि कहा कहौं, उपजत रस रुचि दैन।
मनौ सावक कलहंस के, बोलत अति मृदु बैन॥१४॥
नख पल्लव सुठि सोहने, शोभा बढ़ी सुभाइ।
मानौ छवि चन्द्रावली, कंज दलन लगि आइ॥१५॥
गौर वरन साँवल चरण, रचि मेंहदी के रंग।
तिन तरुवनि तर लुटत रहें, रति जुत कोटि अनंग॥१६॥
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार।
इकछत प्रेम छके रहैं, अद्‌भुत प्रेम-विहार॥१७॥
अनुपम श्यामल गौर छवि, सदा बसहु मन चित्त।
जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रहें नित्त॥१८॥
बरनै दोहा अष्टदस, युगल ध्यान रसखान।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छवि उर में आन॥१९॥
पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिन सों अति प्यार।
ऐसे लाड़िली लाल के, छिन-छिन चरण सँभार॥२०॥

दोऊ जन भींजत अटके बातन।
सघन कुंज के द्वारै ठाढ़े अंबर लपटे गातन॥
ललिता ललित रूप रस भींजीं बूंद बचावत पातन।
जै श्री हित हरिवंश परस्पर प्रीतम मिलवत रति रस घातन॥

★

रसिक नामावली

अगहन बदी दौज से माह सुदी चौथ तक ब्यालीस लीला की समाज होय है।

प्रेमानन्दोत्पुलकित गात्रौ विद्युद्धाराधर सम कांती।
राधाकृष्णौ मनसि दधानं वन्देऽहं श्रीहित हरिवंशम्॥

पद-नमो नमो जय श्री हरिवंश।
रसिक अनन्य वेणु कुल मंडन लीला मान सरोवर हंस॥
नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी रास-विलास प्रसंस।
आगम निगम अगोचर राधे चरण-सरोज व्यास अवतंस॥

श्री नरवाहन के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१॥
श्री नाहरमल के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२॥
श्री बीठलदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥३॥
श्री मोहनदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥४॥
श्री छबीलेदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥५॥
श्री स्वामीजी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥६॥
श्री नवलदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥७॥
श्री व्यासदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥८॥
श्री परमानंद के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥९॥
श्री प्रबोधानंद के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१०॥
श्री गंगा जमुना के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥११॥
श्री कर्मठीबाई के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१२॥
श्री हरिवंशदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१३॥
श्री हरिदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१४॥
श्री तुलाधार के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१५॥
श्री सेवक जू के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१६॥
श्री चत्रभुज स्वामी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१७॥
श्री वैष्णवदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१८॥
श्री खरगसैन के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥१९॥
श्री जैमलजी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२०॥
श्री जसवंत जी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२१॥
श्री सुंदरदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२२॥
श्री पूरनदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२३॥
श्री लालस्वामी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२४॥
श्री दामोदर स्वामी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२५॥
श्री रसिकदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२६॥
श्री हितध्रुवदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२७॥
श्री नागरीदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२८॥
श्री भागमती के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥२९॥
श्री कल्याण पुजारी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥३०॥
श्री गोविंददास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश॥३१॥

श्री हरेकृष्ण के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३२॥
श्री पुहकरदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३३॥
श्री द्वारिकादास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३४॥
श्री हरिदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३५॥
श्री रंग मेदा के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३६॥
श्री कृष्णदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३७॥
श्री गोसाईदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३८॥
श्री मोहनदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥३९॥
श्री माधुरीदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४०॥
श्री स्याम साह के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४१॥
श्री सहचरि सुख के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४२॥
श्री अनन्त भट्ट के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४३॥
श्री अनन्य अली के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४४॥
श्री भोरी सखी के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४५॥
श्री हितदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४६॥
श्री प्रेमदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४७॥
श्री हरिलाल व्यास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४८॥
श्री प्रियालाल के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥४९॥
श्री सर्वसुखदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥५०॥
श्री रतनदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥५१॥
श्री वृन्दावन चाचा के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥५२॥
श्री केलिदास के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥५३॥
सब रसिकन के प्रान जीवन धन श्री हरिवंश ॥५४॥
जै जै राधावल्लभ श्री हरिवंश, श्री वृन्दावन श्रीवनचन्द ॥५५॥

अरिल्ल

मानुष कौ तन पाय भजौ ब्रजनाथ कौं।
दर्बी लैंके मूढ़ जरावत हाथ कौं॥
जय श्रीहित हरिवंश प्रपंच विषय रस मोह के।
हरि हां बिन कंचन क्यौं चलैं पचीसा लोह के॥

★

मदन टेर (ऊँची ठौर)

श्रीजी की प्रथम लता मन्दिर

यह मन्दिर श्रीवृन्दावन-धाम का अति प्राचीन स्थल माना जाता है। श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय में यह स्थल श्रीहित हरिवंश महाप्रभुजी द्वारा ही प्रकट माना जाता है। श्रीवृन्दावन की पंचकोसी परिक्रमा मार्ग में यमुना तट पर वनविहार, रमणरेती वारह घाट के समीप ही मदन टेर है। यहीं पर वह विशाल वट-वृक्ष है जिसके नीचे सर्वप्रथम श्रीहिताचार्य महाप्रभु ने अपने आराध्य श्रीराधावल्लभीजी को विराजमान किया था। यहीं श्रीहित महाप्रभु के दर्शनकर ब्रजवासी आपके दिव्य स्वरूप पर मुग्ध हो गये। यहीं (राजा) नरवाहनजी ने भी प्रथम दर्शन किया। समस्त भक्त ब्रजवासियों सहित नरवाहनजी ने प्रार्थना की कि आप धनुष से बाण चलायें, आपका बाण जिस जगह तक जायेगा वह सारा प्रदेश आपको भेंट है, श्रीहिताचार्य महाप्रभु ने बाण चलाया वह बाण 'तीर घाट' किंवा चीरघाट आज जिसे कहें (गोविन्दघाट) तक गया। फलतः मदनटेर से चीरघाट (गोविन्दघाट) रास-मण्डल तक की भूमि भेंट स्वरूप आई। ऐसी प्राचीन वाणियों में उल्लेख है।

भावुक विचारें इस पवित्र भूमि में जहाँ स्वयं श्रीहिताचार्य महाप्रभु श्रीराधावल्लभीजी को लेकर विराजे थे, सेवार्थ इधर-ऊधर भ्रमण भी करते थे वही यह मदनटेर है, वही रज है, जहाँ उनके श्रीचरण भी डोले थे और वही वह वटवृक्ष है जिसकी शीतल छाँह में श्रीजी महाराज विराजे थे। श्रीसेवकजी ने उसी समय का अपनी वाणी में उल्लेख किया है कि-

''लता भवन सुख शीतल छँहा, श्रीहरिवंश रहत नित जहाँ।
तहाँ न वैभव आन की॥'' वास्तव में, ऐश्वर्य नाम की वस्तु का तो वहाँ प्रवेश ही नहीं था। आज तो इन ऐश्वर्य वस्तुओं की प्रधानता हो गई है एवं उनकी एकत्रिता बड़ी अभिन्न शीतल मानी जाती है। परन्तु सत्य क्या है ये तो भावुकजन स्वयं हृदय में समझ सकं। प्राणप्रभो प्रेम सेवा से रीझें या आधुनिक अर्थ चमक-दमक से। सत्य में बात क्या है वह प्रगट सिद्ध-स्थल आज अब अपने मध्य है, तभी हम उसका आनन्द नहीं ले रहे हैं। उसका पूर्ण उपयोग नहीं कर रहे हैं। ये सौभाग्य मानना चाहिये कि जहाँ स्वयं श्रीजी विराजे